Date – 8 June 2022

विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस

- प्रत्येक वर्ष 7 जून को विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस की मुख्य विशेषताएं:

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) और संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) संयुक्त रूप से अन्य संबंधित संगठनों के सहयोग से सदस्य राज्यों द्वारा विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस के पालन की सुविधा प्रदान करते हैं।
- अदीस अबाबा सम्मेलन और जिनेवा फोरम द्वारा 2019 में की गई खाद्य सुरक्षा को बढ़ाने की प्रतिबद्धता को मजबूत करने के लिए "द फ्यूचर ऑफ फूड सेफ्टी" के तहत वर्ष 2019 में पहली बार इसे मनाया गया।

लक्ष्य:

- खाद्य जनित जोखिमों को रोकने, उनका पता लगाने और उनका प्रबंधन करने, खाद्य सुरक्षा, मानव स्वास्थ्य, आर्थिक समृद्धि, कृषि, बाजार पहुंच, पर्यटन और सतत विकास में योगदान करने के लिए ध्यान आकर्षित करने और कार्रवाई को प्रेरित करने के लिए।

2022 थीम:

- सुरक्षित भोजन, बेहतर स्वास्थ्य।

आवश्यकता:

भोजन से उत्पन्न बीमारियाँ:

- असुरक्षित भोजन मानव स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्थाओं के लिए खतरा है, जिसमें सालाना खाद्य जनित बीमारियों के अनुमानित 600 मिलियन मामले होते हैं, जो कमजोर और हाशिए के लोगों, विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों, संघर्ष से प्रभावित आबादी और प्रवासियों को असमान रूप से प्रभावित करते हैं।

खाद्य जनित रोग बोझ:

- दुनिया भर में अनुमानित 420000 लोग हर साल दूषित भोजन खाने से मर जाते हैं और 5 साल से कम उम्र के बच्चों पर हर साल 125 000 मौतों के साथ खाद्य जनित बीमारी का 40% बोझ होता है।

संबंधित पहल:

वैश्विक:

- कोडेक्स एलिमेंटारिस या "फूड कोड" कोडेक्स एलिमेंटारिस आयोग द्वारा अपनाए गए मानकों, दिशानिर्देशों और अभ्यास के कोड का एक संग्रह है।
- कोडेक्स एलिमेंटेरियस कमीशन खाद्य और कृषि संगठन और विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा संयुक्त रूप से स्थापित एक अंतर-सरकारी निकाय है।
- वर्तमान में इस आयोग के सदस्यों की संख्या 189 है और भारत इस आयोग का सदस्य है।

भारत:

राज्य खाद्य सुरक्षा सूचकांक:

- एफएसएसएआई ने खाद्य सुरक्षा के पांच मानकों पर राज्यों के प्रदर्शन को मापने के लिए राज्य खाद्य सुरक्षा सूचकांक (एसएफएसआई) विकसित किया है।
- मापदंडों में मानव संसाधन और संस्थागत व्यवस्था, अनुपालन, खाद्य परीक्षण – बुनियादी ढांचा और निगरानी, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण और उपभोक्ता सशक्तिकरण शामिल हैं।

ईट राइट इंडिया मूवमेंट:

- यह भारत सरकार और भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (FSSAI) की एक पहल है जो सभी भारतीयों के लिए सुरक्षित, स्वस्थ और टिकाऊ भोजन सुनिश्चित करने के लिए देश की खाद्य प्रणाली को बदलने के लिए है।
- ईट राइट इंडिया को आयुष्मान भारत, पोषण अभियान, एनीमिया मुक्त भारत और स्वच्छ भारत मिशन जैसे प्रमुख कार्यक्रमों पर ध्यान देने के साथ राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 से जोड़ा गया है।

ईट राइट अवार्ड्स:

- एफएसएसएआई ने नागरिकों को सुरक्षित और स्वस्थ भोजन विकल्प बनाने में मदद करने में खाद्य कंपनियों और व्यक्तियों के योगदान को मान्यता देने के लिए 'ईट राइट अवार्ड्स' की स्थापना की है, जो उनके स्वास्थ्य और कल्याण को बेहतर बनाने में मदद करेगा।

ईट राइट मेला:

- एफएसएसएआई द्वारा आयोजित, यह नागरिकों को सही खाने के लिए प्रेरित करने के लिए एक गतिविधि है। यह विभिन्न प्रकार के भोजन के स्वास्थ्य और पोषण लाभों के बारे में नागरिकों को जागरूक करने के लिए आयोजित किया जाता है।

स्वदीप कुमार

रबड़ उद्योग

- ऑल इंडिया रबर इंडस्ट्रीज एसोसिएशन (AIRIA) के अनुसार, 2 बिलियन डॉलर के नॉन-टायर रबर सेक्टर ने वर्ष 2025 तक अपने निर्यात को दोगुना करने का लक्ष्य रखा है।
- वैश्विक बाजार में रबर उत्पादों की हिस्सेदारी वर्तमान में लगभग 212 अरब डॉलर है, जिसके वर्ष 2025 तक बढ़ने की उम्मीद है।

- सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सूक्ष्म, लघु और मध्यम आकार के उद्यमों (MSMEs) को मुक्त व्यापार समझौते (FTA) की शर्तों के तहत अंतर्राष्ट्रीयकरण का लाभ मिले।
- चूंकि एमएसएमई भारत की अर्थव्यवस्था और वाणिज्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं, इसलिए भारत को विदेशी बाजारों में व्यापार करते समय एमएसएमई द्वारा सामना की जाने वाली विशिष्ट चिंताओं, मांगों और बाधाओं को दूर करने के लिए एफटीए प्रावधानों को शामिल करना चाहिए।

अखिल भारतीय रबड़ उद्योग संघ (AIRIA):

- अखिल भारतीय रबड़ उद्योग संघ (AIRIA) उद्योग के हितों की रक्षा और संवर्धन के उद्देश्यों के साथ रबर उद्योग और व्यापार की सुविधा के लिए एक गैर-लाभकारी निकाय है।

रबड़ की मुख्य विशेषताएं:

- प्राकृतिक रबर आइसोप्रीन का एक बहुलक है, जो एक कार्बनिक यौगिक है।
- रबड़ उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाए जाने वाले पेड़ों के लेटेक्स से प्राप्त एक चिपकने वाला लोचदार ठोस पदार्थ है, जिसमें से सबसे महत्वपूर्ण हेविया ब्रासिलिएन्सिस है।
- रबर के पेड़ लगाने के बाद ये लगभग 32 वर्षों तक आर्थिक लाभ प्रदान करते हैं।

स्रोत:

- प्राकृतिक रबर विभिन्न स्रोतों से प्राप्त होता है, सबसे आम पारा रबर का पेड़ (हेविया ब्रासिलिएन्सिस) है। यह अपने पूर्ण विकास के साथ कई वर्षों तक लेटेक्स का उत्पादन करता है।
- कांगो रबर का उत्पादन लैंडोल्फिया वर्ग की लताओं से होता है। इन लताओं को खेतों में नहीं उगाया जा सका, जिसके परिणामस्वरूप कांगो में जंगली पौधों का बड़े पैमाने पर दोहन हुआ।
- डंडेलियन दूध में लेटेक्स भी होता है जिसका उपयोग रबड़ के उत्पादन के लिए किया जा सकता है।

रबर के पेड़ के लिए अनुकूल वातावरण:

मिट्टी:

- ये पेड़ अच्छी जल निकासी प्रणाली और मौसम के अनुकूल मिट्टी में उगते हैं।
- लेटराइट, जलोढ़, तलछटी और गैर-लेटराइट लाल मिट्टी इन पेड़ों की वृद्धि के लिए सबसे अच्छी होती है।

वर्षा और तापमान:

- समान रूप से वितरित वर्षा के साथ वर्ष में कम से कम 100 बरसात के दिन और लगभग 20 से 34 डिग्री सेल्सियस की तापमान सीमा हेविया रबर के पेड़ के विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करती है।
- लगभग 80% आर्द्रता, 2000 घंटे की धूप और तेज हवाओं की अनुपस्थिति भी सर्वोत्तम परिणामों के लिए आवश्यक हैं।

प्रयोग:

- रबर का उपयोग पेंसिल के निशान मिटाने से लेकर टायर, ट्यूब और बड़ी संख्या में औद्योगिक उत्पादों के निर्माण तक विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जाता है।
- आंसू प्रतिरोध के साथ-साथ इसकी उच्च तन्यता ताकत और कंपन प्रतिरोधी गुणों के कारण सिंथेटिक रबर की तुलना में प्राकृतिक रबर को प्राथमिकता दी जाती है।
- यह गुण निर्माण और ऑटोमोबाइल उद्योगों के लिए इसे और अधिक महत्वपूर्ण बनाता है।
- देशों में ऑटोमोबाइल बाजार के विकास से प्राकृतिक रबर उत्पादन की मांग बढ़ने का अनुमान है।
- लेटेक्स उत्पादों, जैसे कैथेटर, दस्ताने और बेल्ट की मांग में वृद्धि भी रबर बाजार के विकास को बढ़ावा देने वाले कारकों में से एक है।

उत्पादन और वितरण:

- वर्ष 2019 के लिए खाद्य और कृषि संगठन कॉर्पोरेट सांख्यिकीय डेटाबेस (FAOStat) के अनुसार, थाईलैंड दुनिया में रबर का सबसे बड़ा उत्पादक है, इसके बाद इंडोनेशिया, मलेशिया, भारत और चीन का स्थान है।

भारत में रबड़ उत्पादन की वर्तमान स्थिति:

- FAOStat 2019 के अनुसार, भारत दुनिया में रबर का चौथा सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता है।

उपभोग:

- रबर की अधिकांश खपत परिवहन क्षेत्र में होती है, इसके बाद फुटवियर उद्योग का स्थान आता है।

निर्यात:

- वित्तीय वर्ष 2020 के दौरान भारत से निर्यात किए गए प्राकृतिक रबर की मात्रा 12 हजार मीट्रिक टन से अधिक थी। भारत से प्राकृतिक रबर आयात करने वाले प्रमुख देशों में जर्मनी, ब्राजील, अमेरिका और इटली शामिल हैं।
- निर्यात उत्पादों में ऑटोमोटिव टायर और ट्यूब, जूते, चिकित्सा सामान, कोट और एप्रन शामिल हैं।

वितरण:

- भारत में पहला रबर बागान केरल के पहाड़ी ढलानों पर वर्ष 1895 में स्थापित किया गया था।
- हालांकि रबड़ की खेती व्यावसायिक पैमाने पर 1902 में शुरू की गई थी।
- केरल भारत में प्राकृतिक रबर का सबसे बड़ा उत्पादक है।
- **प्रमुख क्षेत्र:** कोट्टायम, कोल्लम, एर्नाकुलम, कोझीकोड इस राज्य के सभी जिलों में रबर का उत्पादन होता है।

तमिलनाडु:

- नीलगिरी, मदुरै, कन्याकुमारी, कोयंबटूर और सेलम तमिलनाडु के प्रमुख रबर उत्पादक जिले हैं।

कर्नाटक:

- चिकमगलूर और कोडगु मुख्य उत्पादक जिले हैं।
- त्रिपुरा, असम, अंडमान और निकोबार, गोवा आदि कुछ अन्य रबर उत्पादक राज्य हैं।

स्वदीप कुमार